''संस्कार जागृति मिशन'' को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक–05 वर्ष–02, अगस्त 2020 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

कोविड–19 (कोरोना) वायरस

बचाव ही उचित उपचार है

स्वयं की एवं दूसरों की रक्षा करें।

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-05 वर्ष-02, संवत्सर 2077 अगस्त 2020 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा० अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853121

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख-कविता | पृष्ठ संख्या

वेदवाणी.........03
सम्पादकीय.........04-06
कवि की कलम से.........06
संस्कारकर्ताओं का प्रशिक्षण आवश्यक.........07-08
अच्छे कर्म करो अच्छा फल जरूर मिलेगा.........09
प्रभु का प्यार हमें कहां प्राप्त हो सकता है?.........10-11
स्वास्थ्य चर्चा.........12
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां.........13-15
विज्ञापन.........16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें.........09719910557

वेद वाणी

द्वेषी को अपना प्रशंक बनानेवाला सुवीर कहलाता है

वेद मंत्र

ओ३म् नयसीद्वति द्विष कृणोष्युक्थशंसिनः। नृभिः सुवीर उच्यसे।।

-ऋ० ६।४५।६

ऋषिः-**बार्हस्पत्यः शंयुः**।। देवता-**इन्द्रः**।। छन्दः-**गायत्री**।।

विनय

''**सुवीर**''-**सर्वश्रेष्ठ वीर**-किसे कहना चाहिए? अन्त में तो प्रत्येक गुण की पराकाष्ठा भगवान् में ही है; परिपूर्ण वीरता का निवास भी उन्हीं में है। उनकी वीरता का अनुसरण करनेवाले मनुष्य, नर लोग, सच्चे पुरूष उन भगवान् को ही 'सुवीर' नाम से पुकारते हैं, पर उनकी वीरता कैसी है?

अज्ञानी लोग समझते हैं कि अपने शत्रु, द्वेषी को हानि पहुंचाने में सफल हो जाना ही बहादुरी है। यह निरा अज्ञान है। क्रोध के वश में आ जाना तो हार जाना है। क्रोधवश होकर मनुष्य केवल अपने को विषयुक्त करता और जलाता है। एवं, क्रोधी अपने शत्रु का नाश क्या करेगा? वह तो अपना नाश पहले कर लेता है। ज्यों-ज्यों हम अपने द्वेषी के लिए अनिष्ट-चिन्तन करते हैं, त्यों-त्यों उसमें हमारे प्रति द्वेष और बढ़ता जाता है। उसका द्वेष, उसका शत्रुपना बढ़ता जाता है। शत्रु को हानि पहुंचा लेने पर, उसके शरीर को चोट दे लेने पर, यहां तक कि उसे मार डालने पर भी उसकी शत्रुता नष्ट नहीं होती, वह तो और-और बढ़ती जाती है। शत्रु के शरीर का, धन का, मान का एवं उसकी अन्य सब वस्तुओं का नाश करने में हम चाहे सफल हो जाएं, पर उतना-ही-उतना वह शत्रु (असली शत्रु) बढ़ता जाता है, उसका शत्रुपना बढ़ता जाता है। यह क्या हुआ? वीरता (परमात्मदेव से अनुकरणीय सच्ची वीरता) इसमें है कि वह उसकी बाहरी किसी चीज का नाश न करें (और क्रोध से हम अपना भी नाश न करें) किन्तु किसी तरह उसकी शत्रुता का नाश कर दें। उसके अन्दर हम ऐसे घुसें कि वह हमारा शत्रु न रहे, वह मित्र हो जाए। बहादुरी इसमें है कि हम क्रोध को जीतकर, धैर्य रखकर अपने द्वेषी के द्वेषभाव को बिल्कुल निकाल डालें, ऐसा निकाल डालें कि वह हमारी निन्दा करना तो दूर रहा, वह हमारी प्रशंसा के गीत गाने लगे। यह है शत्रु पर विजय पाना, परन्तु ऐसी विजय पाने के लिए अपने में बड़ा भारी बल चाहिए। अपने में बलिदान की न समाप्त होनेवाली शक्ति चाहिए- बड़ा धैर्य चाहिए, बड़ी भारी वीरता चाहिए। हम भी परिमित अर्थ में बोला करते हैं कि वीर वह जिसकी शत्रु भी प्रशंसा करें, पर हमें तो अपरिमित अर्थ में उस भगवान् की सुवीरता का आदर्श अपने सामने रखना चाहिए, जिनके विषय में भक्त लोग समझते हैं कि आज संसार में जो लोग बिल्कुल उलटे रास्ते जा रहे हैं वे भी एक दिन लौटकर भगवद्भक्त-भगवान् के प्रशंसक बनेंगे और मुक्त होंगे। भगवान् की उस अपरिमित वीरता में से, हृदय परिवर्तन करने की उनकी इस अनन्त शक्ति में से और उनके अनन्त धैर्य में से हम भी कुछ ले-लें, हम भी वीर बनें।

शब्दार्थ

हे इन्द्र! **द्विषः**- द्वेष करनेवाले के द्वेषभाव को **इत् उ**- निश्चय से **अति नयसि**- निकाल डालता है। **तान्**- उन्हें **उक्थशंसिनः**- अपना प्रशंसक **कृणोषि**- बना देता है। **नृभिः**- सच्चे मनुष्यों से तू **सुवीर उच्यसे**- सुवीर कहाता है।

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

सम्पादकीय | शहीद-ए-आजम भगत सिंह का ऋणी है देश

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

भारत ने इस वर्ष अपना 74 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया है। अंग्रेजों की 200 वर्ष की गुलामी के बाद भारत को 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली थी। हम आज जिस आजाद भारत में सांस ले रहे हैं उसकी आजादी की एक-एक बूंद उन अमर शहीदों के रक्त से सींची गई है, जिन्होंने हंसते-हंसते देश की आजादी के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। आज हम ऐसे ही महान क्रांतिकारी सरदार भगत सिंह के बारे में चर्चा करेंगे।

गुलामी के उस समय में जब देश बेहद निराशा के दौर से गुजर रहा था, ब्रिटिश शासन का अत्याचार बढ़ता जा रहा था और गुस्से से भरी दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी एक बेहद नाजुक मोड़ पर खड़ी थी। यह पीढ़ी न तो अपने आप को महात्मा गाँधी से जोड़ पा रही थी न ही इसे कोई और सुयोग्य नेतृत्व नजर आ रहा था। उसी समय भारतीय राजनैतिक पटल पर सरदार भगत सिंह एक धूमकेतु की तरह उभरे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में भगत सिंह का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जाता है। देश में जब भी आजादी का जिक्र होगा शहीद-ए-आजम भगत सिंह का नाम खुद ब खुद सामने आ जाएगा। आजादी के इस परवाने ने ना सिर्फ अपने प्राणों का बलिदान दिया बल्कि उन्होंने देश के युवा को उस समय मार्ग दर्शन किया जब वे खुद बहुत कम उम्र के थे, एक छोटी से उम्र में और इतने कम समय में इस व्यक्ति ने सभी युवाओ के दिल को छू लिया था। एक आदर्शवादी और तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी इस व्यक्ति ने देश के युवाओ को एक नई प्रेरणा दी, एक जोश भर दिया और देश के लिए मर-मिटने का जज्बा पैदा किया। भगत सिंह अपने देश के लिये ही जीये और उसी के लिए शहीद भी हो गये। भगत सिंह का नाम अमर शहीदों में सबसे प्रमुख रूप से लिया जाता है। भगत सिंह का सम्पूर्ण जीवन संघर्ष से परिपूर्ण रहा उनके जीवन से आज के युवा भी प्रेरणा ग्रहण करते है।

भगत सिंह का जन्म 27 सितंबर, 1907 को पंजाब के जिला लायलपुर में बंगा गाँव (पाकिस्तान) में हुआ था। उनकी माता का नाम विद्यावती कौर और पिता सरदार किशन सिंह संधू थे। दो चाचा अजीत सिंह तथा स्वर्ण सिंह अंग्रेजों के खिलाफ होने के कारण जेल में बन्द थे। जिस दिन भगत सिंह पैदा हुए उस दिन उनके पिता एवं चाचा को जेल से रिहा किया गया। इस शुभ घड़ी के अवसर पर भगत सिंह के घर में खुशी और भी बढ़ गयी थी। भगत सिंह की दादी ने बच्चे का नाम भागां वाला अर्थात् अच्छे भाग्य वाला रखा। बाद में उन्हें भगत सिंह कहा जाने लगा। इनका परिवार महर्षि दयानंद सरस्वती व आर्य समाज से प्रेरित था, जिसका अनुकूल प्रभाव उन पर पड़ा था। वे 14 वर्ष की आयु से ही पंजाब की क्रान्तिकारी संस्थाओं में कार्य करने लगे थे।

13 अप्रैल 1919 को लोग वैशाखी मनाने के लिए जलियांवाला बाग में इक्कठे हुए थे। इस दौरान कुछ लोग शांतिपूर्ण तरीके से रोलेट एक्ट के विरोध में एक बैठक का भी आयोजन कर रहे थे। इस को देख गरमाये जनरल डायर ने बिना किसी पूर्व सूचना के लोगों पर गोली चलाने के आदेश दे दिए। इसमें एक हजार से ज्यादा लोग मारे गए। इस घटना के बारे में सुनकर सरदार भगत सिंह कई मील पैदल चलकर जलियांवाला बाग पहुंचे और वहां से रक्त से सनी मिट्टी अपने साथ लेकर अपने घर वापस लौट आए। भगत सिंह का अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ ओर रोष बढ़ गया और उन्होंने इनकी मौत का बदला लेने की प्रतिज्ञा की।................(शेष पेज 05 पर)

पेज 04 का शेष

सम्पादकीय : शहीद-ए-आजम भगत सिंह का ऋणी है देश

.....उस समय भगत सिंह की उम्र मात्र 12 वर्ष की थी। भगत सिंह ने चंद्रशेखर आजाद के साथ मिलकर क्रांतिकारी संगठन तैयार किया। देश की आजादी के संघर्ष में ऐसे रमें कि पूरा जीवन ही देश को समर्पित कर दिया।

सरदार भगत सिंह ने 1920 के महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया। जिसमें गांधी जी विदेशी समानों का बहिष्कार कर रहे थे। महज चौदह वर्ष की उम्र में भगत सिंह ने स्कूल की किताबें और कपड़े जला दिए थे और 1921 में भगत सिंह ने स्कूल छोड़ दिया। 1921 में महात्मा गांधी ने चौरा चौरी हत्याकांड में जब किसानों का साथ नहीं दिया तो इस घटना का भगत सिंह पर गहरा प्रभाव पड़ा। असहयोग आंदोलन से प्रभावित छात्रों के लिए लाला लाजपत राय ने लाहौर में नेशनल कॉलेज की स्थापना की थी। इसी कॉलेज में भगतसिंह ने भी प्रवेश लिया। पंजाब नेशनल कॉलेज में उनकी देशभक्ति की भावना फलने-फूलने लगी। इसी कॉलेज में ही यशपाल, भगवतीचरण, सुखदेव, तीर्थराम, झण्डा सिंह आदि क्रांतिकारियों से संपर्क हुआ। चन्द्रशेखर आजाद जैस महान् क्रान्तिकारी के सम्पर्क में आये और बाद में उनके प्रगाढ़ मित्र बन गये।

9 अगस्त, 1925 को शाहजहांपुर से लखनऊ के लिए चली 8 नंबर डाउन पैसेंजर से काकोरी नामक छोटे से स्टेशन पर सरकारी खजाने को लूट लिया। वर्ष 1926 में नौजवान भारत सभा में भगत सिंह को सेक्रेटरी बना दिया गया। इसके बाद सन् 1928 में उन्होने हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन को ज्वाइन किया। ये चन्द्रशेखर आजाद ने बनाया था इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था। पूरे संगठन ने एकजुट होकर 30 अक्टूबर 1928 को भारत में आए साइमन कमीशन का विरोध किया। इस विरोध में लाला लाजपत राय भी शामिल थे। ''साइमन वापस जाओ'' का नारा लगाते हुए वे लोग लाहौर रेलवे स्टेशन पर ही खड़े रहे, उनके इस आन्दोलन से उन पर ब्रिटिश पुलिस द्वारा लाठी चार्ज होने लगा।

लाला जी बुरी तरह घायल हो गए और उनकी मृत्यु भी हो गयी। उनकी मृत्यु से देश की आजादी के लिए हो रहे आन्दोलन में और भी तेजी आ गयी। भगत सिंह जी व उनकी पार्टी को बहुत जोर का झटका लगा और उन्होंने ठान लिया की अंग्रेजों को इसका जवाब देना होगा और लाला जी की मृत्यु के जिम्मेदार लोगों को मार डालेंगे। फिर क्या था उन्होंने अंग्रेजों को मारने का प्लान बनाया। इसके बाद भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसंबर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जेपी सांडर्स को मार गिराया। इस कार्रवाई में क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद ने भी उनकी पूरी सहायता की। उन्हें पुलिस के ऑफिसर स्कॉट को मारना था मगर गलती से उन्होंने असिस्टेंट पुलिस सान्डर्स को मार डाला था। अपने आप को बचाने के लिए भगत सिंह तभी लाहौर चले गए।

इसके बाद 8 अप्रैल 1929 को उन्होंने साथी क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर ब्रिटिश सरकार की अस्सेम्बली में बम विस्फोट कर दिया। उन्होंने इन्कलाब जिंदाबाद के नारे लगाए और पर्चे बाटें और इसके बाद दोनों ने अपने आप को गिरफ्तार करवा लिया। वे चाहते तो भाग सकते थे मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया। इस विस्फोट का मकसद लोगों तक आजादी की लड़ाई के लिए आवाज पहुंचाना था। इस विस्फोट के बाद भगत सिंह को जेल हो गई। जेल में उन्होंने भूख हड़ताल भी की थी। जेल से भी उन्होंने आजादी के लिए लड़ाई छोड़ी नहीं बल्कि और तेज कर दी। अखबारों के जरिए भगत सिंह लगातार अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लिखते रहे। उन्होंने 23 वर्ष की छोटी-सी आयु में फ्रांस, आयरलैंड और रूस की क्रांति का विषद अध्ययन किया था। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत, पंजाबी, बंगला और आयरिश भाषा के मर्मज्ञ चिंतक.........................(शेष पेज 06 पर)

पेज 05 का शेष

सम्पादकीय : शहीद-ए-आजम भगत सिंह का ऋणी है देश

.....और विचारक भगत सिंह भारत में समाजवाद के पहले व्याख्याता थे। 23 मार्च 1931 को भगत सिंह तथा इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फांसी दे दी गई। फांसी पर जाने से पहले वे बिस्मिल की जीवनी पढ़ रहे थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भगत सिंह का अहम् योगदान रहा। भगत सिंह के बलिदान के लिए पूरा देश उनका ऋणी है। भगत सिंह के उदय से न केवल देश के स्वतंत्रता संग्राम को गति मिली वरन् नवयुवकों के लिए भी वह प्रेरणा स्रोत सिद्ध हुआ। वे देश के समस्त शहीदों के सिरमौर थे। 24 मार्च को यह समाचार जब देशवासियों को मिला तो लोग वहाँ पहुँचे, जहाँ इन शहीदों की पवित्र राख और कुछ अस्थियाँ पड़ी थीं। देश के दीवाने उस राख को ही सिर पर लगाए उन अस्थियों को संभाले अंग्रेजी साम्राज्य को उखाड़ फेंकने का संकल्प लेने लगे। देश और विदेश के प्रमुख नेताओं और पत्रों ने अंग्रेजी सरकार के इस काले कारनामे की तीव्र निंदा की।

ऐसा नहीं है की भगत सिंह देश के लिए कुरबानी देने वाले एकमात्र सेनानी रहे थे। हजारो-लाखो लोगो ने देश में लिए कुरबानी दी है, मगर 23 वर्ष की उम्र में देश की खातिर हँसते हँसते मौत को गले लगाने वाला यह युवा देश के लिए त्याग और बलिदान के मामले में आज भी सभी युवाओं का आदर्श बना हुआ है।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह द्वारा लिखीं ये पक्तियां हमेशा हमें प्रेरित करती रहेंगी-

''राख का हर एक कण मेरी गर्मी से गतिमान है।
मैं एक ऐसा पागल हूं जो जेल में भी आजाद है।।''

कवि की कलम से

गीत : नमन है ऐसे वीरों को...

रचियता : कवि रोहित आर्य (अलीगढ़)

भारत के हित लहू बहाकर, तोड़ गये जंजीरों को।
नमन है ऐसे वीरों को, नमन है ऐसे वीरों को।।
अपने सीने पर झेला था, हर दुश्मन के तीरों को।
नमन है ऐसे वीरों को, नमन है ऐसे वीरों को।।

देश हो ये आजाद सोचकर, अपने सीने अड़ा गये।
भारत मां की आजादी को मौत से पंजा लड़ा गये।।
बज्र बनाकर अपने तन को, मोड़ दिया शमशीरों को।
नमन है ऐसे वीरों को, नमन है ऐसे वीरों को....।।1।।

बालक, बूढ़े और जवानों, ने अपना बलिदान दिया।
हंस-हंसकर संगीनों के, आगे निज सीना तान दिया।।
मस्तक देकर रहे बढ़ाते, भारत मां के चीरों को।
नमन है ऐसे वीरों को, नमन है ऐसे वीरों को....।।2।।

जाने कितनी माताओं ने, अपने बेटे दान किये।
राखी और सिंदूर दे दिया, ऐसे त्याग महान किये।।
झोंक दिया जलती भट्टी में, अपने सुमन शरीरों को।
नमन है ऐसे वीरों को, नमन है ऐसे वीरों को....।।3।।

लाखों के बलिदानों से, आजादी हमने पायी है।
ये चरखे से नहीं मिली, शोणित की नदी बहायी है।।
'रोहित' हरगिज भूल न जाना, लोहू भरी लकीरों को।
नमन है ऐसे वीरों को, नमन है ऐसे वीरों को.....।।4।।

''संस्कारकर्ताओं का प्रशिक्षण आवश्यक''

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा० अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

संस्कारों में उपयुक्त होने वाली कर्मकाण्ड प्रक्रिया का प्रत्येक अंग अपने आप में रहस्यपूर्ण है। उसमें बडा महत्व एवं मर्म छिपा पडा है। कर्मकाण्ड कराते समय इन रहस्यों को व्यख्यापूर्वक समझाया जाना चाहिए। साथ ही उन मन्त्रों अथवा प्रसंगों के माध्यम से जो प्रशिक्षण दिया जाना है वह भी ऐसे प्रभावशाली ढंग से दिया जाना चाहिए कि जिसका संस्कार हो रहा है केवल वह भी नहीं वरन् अन्य जो भी व्यक्ति उस अवसर पर उपस्थित हों वे सभी प्रभाव ग्रहण करें। संस्कार कराने वाले को उत्तम भी होना चाहिए। जो विधानों के रहस्य और मन्त्रों मर्म को ऐसे ढंग से समझा जा सके कि सुनने वाले उसे भावनापूर्वक हृदयगम कर सकें। धर्म प्रचार का, कर्तव्य उद्बोधन का, व्यक्ति निर्माण का यह प्रशिक्षण ही आगे चलकर हमें प्रमुख आधार बनाना पडेगा। इसलिए संस्कारकर्त्ताओं को धर्म संस्कृति का सन्देशवाहक बनकर युग निर्माता की भूमिका प्रस्तुत करने के लिए तैयार होना होगा। प्राचीनकाल में ब्राह्मण ऐसे ही माध्यमों से जन साधारण तक पहुंचते थे और उनकी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याओं का समाधान करने वाले हल प्रस्तुत करते थे। उपयुक्त वातावरण में उपयुक्त प्रकार के प्रशिक्षण का प्रभाव भी उपयुक्त ही होना चाहिए, होता भी था और आगे होने वाला भी है। इन दिनों इस सम्बन्ध में लज्जाजनक दुर्दशा परिलक्षित हो रही है, उसका कायाकल्प ही करना होगा। आज तो ग्राम-गुरु और पण्डा-पण्डित जिन्हें नाममात्र की शिक्षा प्राप्त हुई है। उल्टे-सीधे, इधर-उधर गन्ध, अक्षत डाल-पटक कर अशुद्ध मन्त्रोंच्चारण करते हुए किसी प्रकार कर्मकाण्ड की उलटी लकीर पीट देते हैं। वे न तो उन संस्कारों का महत्व एवं रहस्य स्वंय समझते हैं और न यजमानों को समझा सकते हैं। गन्ध, अक्षत इधर-उधर कराने में ही उनका कृत्य पूरा हो जाता है। यह चिन्ह पूजा वह प्रयोजन पूरा नहीं कर सकतीं, जिसके लिए इन महान परम्पराओं का निर्माण किया गया था।

कर्मकाण्ड की वैज्ञानिक प्रक्रिया से यजमान परिवार को प्रभावित करने के अतिरिक्त यह भी उतना ही आवश्यक है कि इन शुभ अवसरों पर उनके सामयिक कर्तव्यों का उद्बोधन भी कराया जाए। संस्कार उत्सव के अवसर पर परिवार के, पडोस के तथा सम्बन्ध परिचय के नर-नारी एकत्रित होते हैं। दुःख और सुख को बांटकर खाने की प्रथा भारतीय संस्कृति का अंग है। किसी का श्रेय साधन करने वाले संस्कार उत्सव हों और उसके स्वजन सम्बन्धी एकत्रित न हों भला यह कैसे हो सकता है? घर के सभी लोग अपने इस हर्षोत्सव में सम्मलित होने के लिए स्वयं ही तैयार नहीं रहते वरन् प्रीति और अनुरोधपूर्वक अन्य मित्र परिवारों को भी आमन्त्रित करके लाते हैं। उस समय स्वभावतः पांच-पचास व्यक्ति एकत्रित हो जाते हैं यदि कहीं 'कुलिया में गुड फोडने' की तरह अभी तक यह बेगार भुगती जा रही हो तो अब उसमें घर, परिवार, पडोस और परिचय के अधिकारिक नर-नारी बाल-वृद्धि आमन्त्रित किये जाऐं ताकि केवल जिसका संस्कार हो रहा है वही नहीं वरन् उस वातावरण के शक्ति प्रवाह से एवं धर्म धर्म प्रशिक्षण से सभी एकत्रित लोग लाभ उठा सकें।

प्राचीनकाल में यही होता था। संस्कार के अवसर पर उपस्थित उस परिवार एवं पडोस के लोगों को संस्कार कराने वाले विद्वान आचार्य उनके सामयिक कर्तव्यों का प्रेरणाप्रद उद्बोधन कराते थे। जीवन जीने की कला, धर्म आध्यात्म और कर्तव्य का मार्गदर्शन करते थे। संस्कार के माध्यम से आयोजित गोष्ठी में मन्त्रों की व्याख्या करते हुए आचार्य जो प्रेरणा प्रदान करते थे, उससे सुनने वालों की भावनाऐं तरंगति हो उठती थीं। वे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरुक, सावधान होते थे। ....(शेष पेज 08 पर)

पेज 07 का शेष

''संस्कारकर्ताओं का प्रशिक्षण आवश्यक'' (लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य)

.....इस प्रकार यह दो-तीन घण्टें की धर्म गोष्ठी एक महत्वपूर्ण शिक्षण का प्रयोजन पूरा करती थीं। चूंकि हर परिवार में कई-कई व्यक्ति होते हैं और हर व्यक्ति के 16-16 संस्कार होते हैं तो स्वाभाविक थोडे-थोडे दिनों के बाद ऐसी गोष्ठियां घरों में रहेंगीं फिर पडोस में भी यही सब होता है तो इसका परिणाम यही होगा कि आये दिन इन धर्म गोष्ठियों व अच्छे उद्बोधनों का प्रचलन होता रहेगा। जहां ऐसी सुविधा उपलब्ध हो वहां के लोग कैसे कुमार्गगामी हो सकेंगे और कैसे पथ भ्रष्ट होगें? साधारण वातावरण में किया हुआ प्रशिक्षण इतना प्रभावशाली नहीं होता जितना धर्मोत्साह, उल्लास एवं उत्साह भरे वातावरण में दी हुई शिक्षा हृदयगम होती है। दाम्पत्य कर्तव्यों की बात किसी पुस्तक में पढ़ ली जाय या बता दी जाय तो वह उतनी प्रभावशाली नहीं होगी जितनी कि विवाह समारोह के समय जब वर-वधू दोनों एक-दूसरे का हाथ पकडकर पाणिग्रहण करते हैं, तब उस समय खडे होकर उपस्थित सम्भ्रान्त गुरुजनों के, देवताओं के, जनसाधारण के सामने की हुयी प्रतिज्ञायें। वे प्रतिज्ञायें यदि स्वस्थ मन से की गयी हों तो आजीवन स्मरण रहेगीं और यदि दिलाकर लज्जित एवं सावधान भी कर सकेगा। गंगा में खडे होकर या गंगाजल को हाथ में रखकर कसम खाने का अवसर आने पर लोग झूंठ बोलते हुए कांपते हैं पर साधारण स्थिति में बार-बार बोलते रहते हैं। धर्मानुष्ठानों का एक बडा मनोवैज्ञानिक लाभ या रहस्य यह भी है कि उस समय जो कहा या सुना जएगा वह अत्यधिक प्रभावयुक्त होगा। समाजशास्त्र और मनोविज्ञान शास्त्र दोनों ही इस तथ्य की प्रबल पुष्टि करते हैं कि उपयुक्त वातावरण एवं परिस्थितियों में दी गयी शिक्षा सामान्य रीति से कहने सुनने अपेक्षा कहीं अधिक प्रभावशाली होती है। संस्कारों के निमित्त आयोजित गोष्ठियां एवं उद्बोधन इस प्रायोजन को पूरा करते हैं। उनके माध्यम से दिए गये प्रशिक्षण का प्रभाव सुनने वालों के अन्तःकरण में गहराई तक प्रवेश करने वाला होना ही चाहिए।

''संस्कार जागृति मिशन'' की ओर से सभी भाई-बहिनों को रक्षाबंधन की हार्दिक बधाई

भारत में भाई-बहनों के बीच प्रेम और कर्तव्य की भूमिका किसी एक दिन की मोहताज नहीं है पर रक्षाबंधन के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व की वजह से ही यह दिन इतना महत्वपूर्ण बना है। बरसों से चला आ रहा यह त्यौहार आज भी बेहद हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

श्रावण मास के पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला यह त्यौहार भाई का बहन के प्रति प्यार का प्रतीक है। रक्षाबंधन पर बहनें भाइयों की दाहिनी कलाई में राखी बांधती हैं, उनका तिलक करती हैं और उनसे अपनी रक्षा का संकल्प लेती हैं।

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका

श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी

(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

की अमृतमयी वाणी में

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित

यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश

कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

प्रेरक प्रसंग

'' अच्छे कर्म करो अच्छा फल जरूर मिलेगा''

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

एक बार किसी राज्य का राजा एक नगर में भ्रमण कर रहा था। राजा अक्सर गाँव-गाँव जाकर लोगों की समस्या को सुनता और उनमें सुधार की पूरी कोशिश करता। उसके कर्तव्यपरायण के चर्चे दूर देशों तक फैले हुए थे।

ऐसे ही गाँव में लोगों के बीच घूमते हुए राजा के कुर्ते का एक बटन टूट गया। राजा ने तुरन्त मंत्री को आदेश दिया कि गाँव से किसी अच्छे से दर्जी को बुलाया जाये जो मेरे कुर्ते का बटन लगा सके। तुरंत पूरे गाँव में अच्छे दर्जी की खोज शुरू हो गयी। संयोग से उस गाँव में एक ही दर्जी था जिसकी गाँव में ही एक छोटी सी दुकान थी। दर्जी को राजा के पास लाया गया। राजा बोला मेरे कुर्ते का बटन सिल सकते हो? दर्जी ने कहा कि जी हुजूर ये कौन सा मुश्किल काम है, दर्जी ने तुरंत अपने थैले से धागा निकाला और राजा के कुर्ते का बटन लगा दिया। राजा ने खुश होकर दर्जी से कहा कि बताओ तुमको इस काम के कितने पैसे दूँ? दर्जी ने मन में सोचा और बोला महाराज ये तो बहुत छोटा काम था, इसका मैं आपसे पैसे नहीं ले सकता। राजा ने फिर कहा नहीं तुम माँगो तो सही, हम तुम्हें इस काम की कीमत जरूर देंगे। दर्जी ने सोचा कि बटन तो राजा के पास था ही मैंने तो बस धागा लगाया है, मैं राजा से इस काम के 2 रुपये मांग लेता हूँ, फिर से दर्जी ने मन में सोचा कि मैं राजा से अगर 2 रुपये मागूंगा तो राजा सोचेगा कि इतने से काम के इतने सारे पैसे, कहीं राजा ये ना सोचे की बटन लगाने के मेरे से 2 रुपये ले रहा है। तो गाँव वालों से कितना लेता होगा क्योंकि उस जमाने में 2 रुपये की कीमत बहुत होती थी। यही सोचकर दर्जी ने कहा महाराज आप अपनी स्वेच्छा से कुछ भी दे दें। अब राजा को भी अपनी हैसियत के हिसाब से देना था ताकि समाज में उसका रुतबा छोटा ना हो जाये, यही सोचकर राजा ने दर्जी को 2 गाँव देने का हुक्म दे दिया। अब दर्जी मन में सोच रहा था कि कहाँ मैं 2 रुपये लेने की सोच रहा था और अब तो राजा ने 2 गाँव का मालिक मुझे बना दिया।

पाठको! उस दर्जी जैसी ही हालत हम इंसानों की भी है। हम रोज भगवान से कुछ ना कुछ मांगते हैं। लोग मंदिर भी जाते हैं और भगवान से मांगते हैं लेकिन आप दर्जी की तरह हैं क्या पता ईश्वर हमको कुछ बड़ा और कुछ अच्छा देना चाहता हो लेकिन हम वो समझ ही नहीं पाते। दोस्तों गीता में भगवान श्री कृष्णा ने कहा है कि कर्म करो फल की इच्छा मत करो। अच्छे कर्म करो अच्छा फल जरूर मिलेगा। जब हम प्रभु पर सब कुछ छोड़ देते हैं तो वह अपने हिसाब से देता है, सिर्फ हम मांगने में कमी कर जाते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:खभाग् भवेत॥

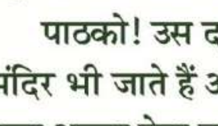

सभी देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनायें

वंदना प्रिय आर्य जी
(उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

डा.अर्चना प्रिय आर्य जी
(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

प्रभु का प्यार हमें कहां प्राप्त हो सकता है?

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

चलभाष : 09719601088

उपह्वरे गिराणां, संगमे च नदीनाम्। धीयो विप्रो अजायत।। (यजुर्वेद)

प्रस्तुत मंत्र यजुर्वेद के 26वें अध्याय का है। इसमें बताया गया है कि ईश्वर का प्यार हमें कहां प्राप्त हो सकता है? खुली आंखों से प्रभु की कला और कीर्ति का कहां दर्शन कर सकते हैं? किस स्थान पर बैठकर हम ईश्वर की याद करें और उपासना करें?

श्रुति कहती है कि पहाड़ों की गुफाओं और कन्दराओं के पास या नदियों या प्राकृतिक सरोवरों के पास जाकर, नदियों या चश्मों का जहां संगम हो (मनुष्य की बनायी नहरों या मनुष्य के द्वारा निर्मित तालाबों के पास नहीं) ऐसी जगह चले जाओ जहां उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम, ऊपर-नीचे प्रभु की कारीगरी, प्रभु की कृपा और उसकी कला हमें याद दिला रही है। मनुष्य जब यूरोप के बड़े-बड़े गिरजों को देखता है, जिन्हें कुशल कारीगरों ने बड़ी तपस्या से सजाया है, इन गिरजों की चित्रकला और शिल्पकला के सामने भारत के मन्दिरों की कला कोई महत्व नहीं रखती। इस्तम्बूल की मस्जिद और मौट्रियल के गिरजों को देखो, ये कितने भव्य हैं। पर ये मन्दिर, मस्जिद और गिरजे आदमी की कारीगरी की ही प्रशंसा करते हैं। फर्श को देखो तो आदमी की कारीगरी, दीवारों व किवाड़ों को देखो तो आदमी की कारीगरी और ऊंची-ऊंची छतों को देखों तो आदमी की कृति और कला दृश्यमान ही होती है। मनुष्य अपनी कला से प्रभु की कला को छिपा देता है। जब तक पत्थर का एक टुकड़ा पर्वत की गोद में पड़ा है, वह पुकार-पुकार कर कह रहा है कि मेरा बनाने वाला कोई मानव शिल्पी नहीं है पर कारीगर उसी पत्थर के टुकडे को छैनी से तराश कर पत्थर की कूँडी बना देता है तो यह कूँडी बोल-बोलकर, पुकार-पुकार कर कहती है कि मेरा निर्माता या शिल्पी आदमी है। आदमी की बनायी हुई मूर्तियों को तोड़कर चूरा कर दो, अब फिर पत्थर के चूरे के कण-कण तुमसे कहेंगे हम तो तुम्हारे बनाये नहीं, ईश्वर के बनाये हैं। इसलिए मैं कहा करता हूं कि यदि ईश्वर के दर्शन करने हो तो गिरजे, मस्जिदों व मन्दिरों से बाहर निकल जाओ, चले जाओ जंगलों में, लहलहाते खेतों के पास, चले जाओ बागों के पास वहां ईश्वर आपको दिखायी पड़ेगा। ईश्वर की उपासना ड्राइंगरूमों में, महलों के सजे सजाये कमरों में, संगमरमर की बनायी हुई तुम्हारी भव्य यज्ञशालाओं में नहीं हो सकती। और तुम्हें कहीं जगह नहीं मिले तो मकान की छत पर ही चले जाओ कम से कम तुम्हारे सर के ऊपर विस्तृत आकाश तो दिखाई पड़ेगा। अमावस्या की रात को छत से विस्तृत ब्रम्हाण्ड के उस ज्योतिर्मय लोक को देखो जिसमें करोडों मील दूर चमचमाते तारे दीख रहे हैं वे बतायेंगे कि ईश्वर कितना महान है? और उसका साम्राज्य कहां-कहां तक फैला हुआ है? इतने बड़े विश्व के सम्राट बृहस्पति और ब्रम्हा की तुलना में तुम अयोध्या, मथुरा और द्वारिका के राजा की क्यों बात करते हो? अपने देश में तुम्हें अपने राष्ट्रपति का वैभव दिखेगा। लेकिन छत के ऊपर बैठकर ईश्वर के वैभव को देखकर मुग्ध होने का अभ्यास डालो। याद रखो कि जो प्रभु की कारीगरी से प्यार नहीं कर सकता वह प्रभु का प्यारा नहीं बन सकता।

एक दिन की बात है कि मैं बाग में घूम रहा था। मैंने देखा कि कुछ लोगों का छोटा सा समूह दरी बिछाकर एक छपी हुई तस्वीर की मानो पूजा कर रहा है। किसी आचार्य या गुरू का चित्र था, क्योंकि आजकल भारत में अनेक गुरू, देवी, माताएं और भगवान पैदा हो गये हैं। मेरे हृदय ने कहा कि इन अबोध पुरूषों पर तरस खाओ। बाग में इन्हें कोई चीज प्रभु की याद दिलाने को नहीं मिली, कि यह कागज पर छपी तस्वीर लाये हैं। हमें याद रखना चाहिए कि यदि बाग के फूल, पत्तियां, घास, दूब तथा खिले हुए फूलों पर मड़रातीं तितलियां जिस मूर्ख को ईश्वर की याद नहीं दिला सकतीं, तो उसे छपारखाने की तस्वीरें कैसे याद दिलावेंगी?.......(शेष पेज 11 पर)

पेज 10 का शेष

प्रभु का प्यार हमें कहां प्राप्त हो सकता है? (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

.....लोगों ने ईश्वर के दर्शन का मखौल बना रखा है। प्रभु तो अपनी कृति में छिपा हुआ हमें मुस्कराकर अपनी ओर बुला रहा है कि मैं यहां हूं, मैं तुमसे दूर नहीं हूं।

प्रभु को बड़े प्यार से सम्बोधित किया गया है किंतु ''उपयामगृहीतं'' हो। ईश्वर की सर्वव्यापकता में संदेह ही क्या, क्योंकि दूर या निकट कोई भी ऐसा स्थान नहीं जहां उसकी कृति, उसका काव्य, उसकी चित्रकारी और उसका प्यार नहीं है। ''तद्दूरे तद्वन्तिके'', वह दूर से दूर भी है और निकट से निकट।

''तदन्तरस्य सर्वस्य तदुसर्वस्यास्य बाह्यत:'', सबके भीतर भी है और सबके बाहर भी।

पर याद रखना चाहिए कि उसके पास तुम्हें अकेले जाना है। तुम चाहते हो कि प्रभु दर्शन के समय तुम्हारे साथ तुम्हारी पत्नी भी चले, बेटा भी चले, कुनवा भी चले तो ऐसा नहीं होगा। ईश्वर सबसे अकेले में मिलता है। तुम्हारे साथ कोई नहीं जा सकता है। न राम जायेगा, न हनुमान, न कृष्ण, न राधा, न ईसा, न मोहम्मद। इनमें से भी जिसे जाना होगा वह अकेले ही जायेगा। अपने भक्तों को वह नहीं ले जा सकेगा। काई गुरू या आचार्य भी तुमको अपने साथ नहीं ले जा सकेगा। तुम उसके पास किसी माध्यम से नहीं जाओगे चाहे तुम किसी भी माध्यम से क्यों न जाना चाहते हों। वह तो ''उपयामगृहीत्'' है- सीधे उसके दर्शन होते हैं, अकेले में होते हैं। अपने अन्त:करण के मार्ग से झांक कर देखो, वह सीधे तुम्हे दिखायी देगा। तुम्हारी पत्नी यदि उसे देखना चाहेगी तो वह अपने अन्त:करण के मार्ग से देखेगी, तुम्हारा बेटा देखना चाहेगा तो उसे भी अपनी भीतर उसके दर्शन होंगे। प्रभु सबको अलग-अलग एकान्त में प्यार करता है और अलग-अलग तुमको डांटता-डपटता भी है। प्रभु के दर्शन पाते ही तुम उसके प्यारे बन जाओगे। इतने प्यारे बन जाओगे कि फिर तुम्हें औरों का प्यार फीका मालूम होने लगेगा। कहीं उसका प्यार मिल गया तो फिर उसके आगे दूसरों के प्यार की उपेक्षा करने लगोगे। इसलिए मैंने कहा- कि प्रभु के दर्शन तुम्हें अकेले में करने पड़ेंगे, वह अकेले में तुम्हे दर्शन देगा। कोई पत्नी नहीं चाहती कि उसका पति ईश्वर को प्यार करे। कोई पति भी नहीं चाहता कि पत्नी ईश्वर से प्यार करने लगे। पत्नी चाहती है कि उसका पति सिवाय उसके किसी को प्यार न करे। कहा जाता है कि औरतें और कुत्ते प्यार के मामले में बड़े ईर्ष्यालु होते हैं। मैंने घरों में पले हुए कुत्तों को देखा है जो यह चाहते हैं कि उसका मालिक केवल उन्हें प्यार करे, अपने बेटे-बेटियों को भी नहीं।

1. मीरा के पति को यह असह्य था कि मीरा प्रभु को प्यार करे।
2. महर्षि दयानंद के पिता को यह असह्य था कि उसका बेटा मूलशंकर प्यारे प्रभु कह खोज में घर से बाहर निकल पड़े।

वस्तुत: सच्ची बात तो यह है कि कोई भी नहीं चाहता कि उसका बच्चा ईश्वर का प्यारा बन जाए, क्योंकि वे यह जानते हैं कि जो ईश्वर का प्यारा बन जाता है उसे सारी दुनियां फीकी लगने लगती है। कबीर, तुलसीदास, मीराबाई, गौतम बुद्ध या दयानंद की प्रशंसा तो संसार करेगा पर वह यही चाहेगा कि दूसरों के बच्चे सन्त बनें, साधु बनें, संन्यासी बने पर उनके पुत्र और पुत्री गृहस्थी में ही बंधे रहें। जिसे ईश्वर के दर्शन हो जाते हैं और जो ईश्वर का प्यारा बन जाता है, उसका तो जीवन ही बदल जाता है। ईश्वर के दर्शन से मन बदल जाता है और मन को बदले बिना ईश्वर भी नहीं मिलता। ईश्वर के पास तुम्हें अकेला जाना पड़ेगा। तुम्हारा मन भी वहां नहीं जायेगा।

न तत्र चक्षुर्गच्छति, न वाग्गच्छति, न मनो न विद्यो न विजीनाम:।

वहां तो तुम आंख, नाक, वाणी, मन इनमें से कोई नहीं ले जा सकोगे। यदि तुम दर्शन करोगे तो बिना आंख के, यदि तुम उसकी वाणी सुनोगे तो बिना कान के। प्रभु भी तो बिना आंख-कान के देखता और सुनता है और बिना मुख के बोलता है। तुम्हें भी वैसा ही करना पड़ेगा। तुम मन को वहां नहीं ले जा सकते।

............................(शेष अगले माह के अंक में)

स्वास्थ्य चर्चा

संजीवनी का काम करता है 'गौ-मूत्र'

नीति प्रिय आर्य

भारत में गाय (कामधेनु) का दर्जा मां के समान है। वेद व शास्त्रों में ऋषि-महर्षियों द्वारा गाय की महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है। प्राचीनकाल से ही गाय की पूजा की जाती है और माना जाता है कि गाय में 36 करोड़ देवी देवताओं का निवास होता है। गाय के दूध, दही, मक्खन, घी, छाछ, मूत्र, गोबर आदि से अनेक रोग दूर होते हैं। इस माह के अंक में केवल गौ-मूत्र के बारे में ही बात करेंगे।

भागती-दौड़ती इस जिंदगी में लोग जंक फूड को जिस तरह से तवज्जो दे रहे हैं, उसके कारण कई बीमरियां उन्हें दिन पर दिन घेरती जा रही हैं, जिसे गोमूत्र के सेवन से पूरे शरीर को जहर से मुक्त किया जा सकता है। आजकल गौ-मूत्र का नाम सुनकर कई लोगों की नाक-भौं सिकुड़ जाती हैं, लेकिन वे ये नहीं जानते कि गौमूत्र के नियमित सेवन से बड़े-बड़े रोग तक दूर हो जाते हैं। गौ-मूत्र एक महौषधि है। इसका उपयोग प्राचीन काल से ही रोगों को दूर करने में किया जा रहा है। आयुर्वेद के अनुसार देसी गाय का गौ-मूत्र एक संजीवनी है। गौ-मूत्र एक अमृत के सामान है जो दीर्घ जीवन प्रदान करता है, पुनर्जीवन देता है, रोगों को भगा देता है, रोग प्रतिकारक शक्ति एवं शरीर की मांस-पेशियों को मजबूत करता है। इसमें पोटैशियम, मैग्नीशियम क्लोराइड, फॉस्फेट, अमोनिया, कैरोटिन, स्वर्ण क्षार आदि पोषक तत्व विद्यमान रहते हैं इसलिए इसे औषधीय गुणों की दृष्टि से महौषधि माना गया है। गौ-मूत्र हमेशा स्वस्थ देशी गाय का ही लिया जाना चाहिए और हमेशा निश्चित तापमान पर रखा जाना चाहिए न अधिक गर्म और न अधिक ठंडा। गौ-मूत्र का कितना सेवन करना चाहिए यह मौसम पर निर्भर है। इसकी प्रकृति कुछ गर्म होती है इसीलिए गर्मियों में इसकी मात्रा कम लेनी चाहिए। आइए जानते हैं गौ-मूत्र से होने वाले लाभ के बारे में-

गौ-मूत्र से होने वाले लाभ :-

1. कैंसर के लिए गौ-मूत्र अत्यंत लाभकारी होता है। गौ-मूत्र में शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं। साथ ही यह शरीर में फ्री रेडिक्लस व ऑक्सिडेटिव स्ट्रेस को खत्म करने का काम करता है।

2. आयुर्वेदिक ग्रंथों में गौ-मूत्र को एक प्राकृतिक औषधीय पदार्थ के रूप में बताया गया है। इसके नियमित सेवन से वजन घटाने में सहायता मिल सकती है।

3. गौ-मूत्र मधुमेह से ग्रस्त रोगियों के लिए बहुत ही लाभप्रद होता है। इसमें एंटीडायबिटीक व एंटीऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं, जिस कारण यह शरीर में ग्लूकोज की मात्रा को नियंत्रित कर सकता है।

4. जब आप अधिक तैलीय व वसा वाले खाद्य पदार्थों का सेवन करते हैं, तो शरीर में कालेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ जाता है। शरीर में फ्री रेडिकल्स भी बनने लगते हैं। परिणामस्वरूप लिवर में सूजन आ सकती है और आपको कई बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में अगर आप गौ मूत्र का सेवन करते हैं, तो इन बीमारियों से बच सकते हैं।

5. गौ-मूत्र के फायदे में थाइराइड को ठीक करना भी शामिल है। शरीर में थायरायड का स्तर सामान्य बनाए रखने के लिए ट्राईआयोडोथायरोनिन और थायरोक्सिन हार्मोंस का उत्पादन जरूरी है। इन हार्मोंस का उत्पादन संतुलित मात्रा में हो, इसके लिए अच्छा और पर्याप्त आयोडीन का सेवन करना जरूरी है। आयोडीन की कमी से थायराइड का खतरा बढ़ सकता है। गोमूत्र में आयोडीन पर्याप्त मात्रा में मौजूद होता है, जो थायराइड की समस्या को रोकने में मदद करता है।

सलाह :- गोमूत्र को दिन में दो बार सुबह और शाम पिया जा सकता है। ध्यान रहे कि गोमूत्र को फिल्टर करना जरूरी होता है। उसके बाद ही इसका सेवन किया जा सकता है।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर ऊंचागांव स्थित संस्कार जागृति मिशन के कार्यालय पर योगाभ्यास करतीं मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी व उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य जी।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर ऊंचागांव स्थित संस्कार जागृति मिशन के कार्यालय पर योगाभ्यास करते संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी, सचिव विवेक प्रिय आर्य जी व नीति प्रिय आर्य जी।

एक कार्यक्रम के दौरान संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य जी को सम्मानित करते नवीन शर्मा जी।

पत्रकारों से वार्ता करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी। साथ हैं प्रसिद्ध कवियत्री पूनम वर्मा जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

पितृ दिवस पर मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी को सम्मानित करतीं अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी, उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य जी, विवेक प्रिय आर्य जी व उत्कर्ष प्रताप जी।

हाथरस के जिला पंचायत अध्यक्ष डा.विनोद उपाध्याय जी से मुलाकात करते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर भाइयों की कलाई पर रक्षासूत्र बांधतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य जी व श्रीमती प्रियंका सिंह चाहर जी।

वेद स्वाध्याय के दौरान श्री लखम सिंह आर्य जी से शंका समाधान करतीं मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य जी।

ताराधाम कॉलोनी (मथुरा) में वृक्षारोपण करते मिशन पदाधिकारी डा.कपिल प्रताप सिंह जी, मेजर डा.दरब सिंह जी व दीपक सारस्वत जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

अमर भारती रविवार, 21 जून 2020, आगरा

तन और मन को निरोगी बनाता है योग - डॉ.अर्चना प्रिय

अमर भारती संवाददाता

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग की महिमा बताते हुए कहा कि योग आध्यात्म से जुडा है। प्राचीन काल से योग के चलन के चलते समाज संगठित था। लेकिन बदलते परिवेश में योग की महत्ता कम होने का कारण ही समाज में उत्पन्न बिखराव की स्थिति है। उन्होंने कहा कि योग शब्द के दो अर्थ हैं और दोनों ही महत्वपूर्ण है। पहला है-जोड़ और दूसरा है समाधि। जब तक हम स्वयं से नहीं जुड़ते, समाधि तक पहुंचना असंभव होगा। योग का अर्थ परमात्मा से मिलन है। योग से तन व मन निरोगी बनता है। यह स्वस्थ जीवन जीने का आधार है। डॉ. आर्य ने कहा कि योग एक प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति है, जिसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है। उन्होंने कहा कि योग को हमें अपने जीवन का अंग बना लेना चाहिए। यह जिंदगी जीने का सलीका है, इसके बिना जिंदगी नीरस है। आचार्य ने कहा कि ईश्वर के ज्ञान, दर्शन और मिलन के लिए जो कुछ किया जाता है उस सधे हुए प्रयत्न का नाम योग है। जो कोई दृ?वती होकर विधिपूर्वक उत्साह, प्रेम, प्रसन्नता, श्रद्धा, विश्वास और संयम सहित प्रयत्न करता है उसे योगी कहते हैं।

हिन्दुस्तान आगरा • मंगलवार • 26 मई 2020 •

संस्थाओं ने किया कोरोना योद्धाओं का सम्मान

मथुरा | हिन्दुस्तान संवाद

कोविड-19 के चलते हुए लॉकडाउन में जरूरतमंदों की सेवा करने के लिए दर्जन भर संस्थाओं ने संस्कार जागृति मिशन को सम्मानित किया। इसके लिए संस्थाओं ने मिशन की अध्यक्षा डा. अर्चना प्रिय आर्य को कोराना वॉरियर्स सम्मान से नवाजा।

मिशन द्वारा जरूरतमंदों को निःशुल्क राशन, भोजन आदि के साथ सेनेटाइजर व साबुन आदि का वितरण किया गया था। वहीं सदस्यों ने लोगों को सामाजिक दूरी, घरों पर ही रहने, बार-बार हाथ धोने के लिए जागरूक भी किया। मिशन के ऐसे कार्यों से प्रभावित होकर सामाजिक संस्था नेशनल एनजीओ फेडरेशन, इनरव्हील क्लब ऑफ वृंदावन, प्रधानमंत्री जन कल्याणकारी योजना प्रचार अभियान, ग्रामीण आवाज फाउंडेशन, जस्टिस फॉर चिल्ड्रन एंड वूमेन सोसायटी, सुख्याति भारत सेवा आर्ट्स, श्रीकृष्ण कीर्ति फाउंडेशन, हरिनाम प्रचार सेवा संस्थान, रोटी बैंक, फिल्म एंड टीवी मीडिया एसोसिएशन, ब्रज युवा शक्ति संगठन, ब्रज विकास दल, स्टैण्ड विद देहली पुलिस, भारती शिल्पकला प्रा.लि., पीएन न्यूज एवं पार्षद रश्मि शर्मा आदि द्वारा सम्मान पत्र दिया गया। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य व अध्यक्ष अर्चना प्रिय ने सभी का आभार व्यक्त किया है। इसे लेकर सभी पदाधिकारी एवं सदस्यों ने हर्ष जताया है।

अमर भारती सोमवार, 22 जून 2020, आगरा

संस्कार जागृति मिशन ने किया योगाभ्यास

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर देहात में योगाभ्यास किया गया। ऊंचागांव में संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य के सानिध्य में लगाए योग शिविर में मिशन के पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि योग व्यक्ति को बीमारियों से बचाता है। इसे हमें नित्यकर्म में शामिल करना चाहिए, जिससे हम स्वस्थ रह सकें। क्योंकि स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ्य आत्मा निवास करती है।

योगाभ्यास करती संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य व उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य।

उन्होंने कहा कि योग जीवन का आधार है। यम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याआहार, धारणा, ध्यान, तथा समाधि योग के आठ अंग हैं। मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि योग तन के साथ मन को भी स्वस्थ्य रखता है। आज की युवा पी?ी डिप्रेशन का शिकार होती जा रही है, नकारात्मक विचारों का प्रवाह उनके दिमागों में भ्रमण करता है, इन सभी बीमारियों से बचने का एकमात्र उपाय है अपनी दिनचर्या में योग को शामिल करना। उन्होंने उपस्थितजनों को नियमित योगाभ्यास करने का संकल्प भी दिलाया। इस अवसर पर मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, सचिव विवेक प्रिय आर्य आदि रहे।

अमर उजाला आगरा | रविवार, 21 जून 2020

'कोरोना काल में निरोग रहने के लिए योग को अपनाएं'

विश्व योग दिवस आज

मथुरा/वृंदावन। आज विश्व योग दिवस है। इस खास दिन पर देश ही नहीं, दुनिया भर में लोग निरोग रहने के लिए योग को अपनाएंगे। मथुरा जनपद में भी विभिन्न सामाजिक संगठन और निजी तौर पर लोग योग का हिस्सा बनेंगे। अमर उजाला फाउंडेशन की पहल पर सैकड़ों लोग घर की छत या आंगन में योगासन करते नजर आएंगे।

AMAR UJALA FOUNDATION

वृंदावन ब्राह्मण महासभा द्वारा सेवाकुंज स्थित गिरधरनाथजी की हवेली में योग करके निरोग रहने का संदेश दिया। महासभा के संरक्षक सुरेश चंद शर्मा, अध्यक्ष महेश भारद्वाज और श्रीहरि सुरेशाचार्य ने कहा कि प्रकृति से निकटता और योगमय जीवन को अपनाकर निरोग रहने के साथ ही हम सदैव ऊर्जावान भी महसूस करेंगे। मथुरा संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि योग आध्यात्म से जुड़ा है। योग शब्द के दो अर्थ हैं। पहला है जोड़ और दूसरा है समाधि। जब तक हम स्वयं से नहीं जुड़ते, समाधि तक पहुंचना असंभव होगा। योग से तन व मन निरोगी बनता है। यह स्वस्थ जीवन का आधार है। संवाद

20 जून 2020 राजपथ मथुरा

तन-मन को निरोगी बनाता है योग: अर्चना प्रिय

संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष ने बताई योग की महिमा

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग की महिमा बताते हुए कहा कि योग आध्यात्म से जुडा है और प्राचीन काल से योग के चलन के चलते समाज संगठित और सद्व्यवहारी था। लेकिन बदलते परिवेश में योग की महत्ता कम होने का कारण ही समाज में उत्पन्न बिखराव की स्थिति है। उन्होंने कहा कि योग शब्द के दो अर्थ हैं और दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। पहला है. जोड़ और दूसरा है समाधि। जब तक हम स्वयं से नहीं जुड़ते, समाधि तक पहुंचना असंभव होगा। योग का अर्थ परमात्मा से मिलन है। योग से तन व मन निरोगी बनता है। यह स्वस्थ जीवन जीने का आधार है। डॉ. आर्य ने कहा कि योग एक प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति है जिसमें शरीर मन और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है।

दैनिक जागरण आगरा/मथुरा, 26 मई 2020

जरूरतमंदों की सेवा पर मिला सम्मान

संस, मथुरा : लॉकडाउन में जरूरतमंदों की सेवा करने पर एक दर्जन से ज्यादा संस्थाओं ने संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य को कोराना वॉरियर्स के सम्मान से नवाजा।

मिशन द्वारा लॉकडाउन में आटा, चावल, नमक, तेल, पूड़ी, सब्जी के पैकेट, सैनिटाइजर, साबुन आदि वितरित किए गए। शारीरिक दूरी बनाए रखने को भी लोगों को जागरूक किया गया। इन कार्यों के लिए सामाजिक संस्था फेडरेशन भारत, इनरव्हील क्लब ऑफ वृंदावन, ग्रामीण आवाज फाउंडेशन, जस्टिस फॉर चिल्ड्रन एंड वूमेन

छोटीसीबात 20 जून 2020

योग का अर्थ है परमात्मा से मिलन

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग की महिमा बताते हुए कहा कि योग आध्यात्म से जुडा है और प्राचीन काल से योग के चलन के चलते समाज संगठित और सदव्यवहारी था लेकिन बदलते परिवेश में योग की महत्ता कम होने का कारण ही समाज में उत्पन्न बिखराव की स्थिति है। उन्होंने कहा कि योग शब्द के दो अर्थ हैं और दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। योग एक प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति है, जिसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता

राजपथ मथुरा 22 जून 2020

संस्कार जागृति मिशन ने देहात में किया योगाभ्यास

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर देहात में योगाभ्यास किया गया। ऊंचागांव में संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य के सानिध्य में लगाए योग शिविर में मिशन के पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि योग व्यक्ति को बीमारियों से बचाता है। योग जीवन का आधार

छोटीसीबात 22 जून 2020,

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ्य आत्मा निवास करती है

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर देहात में योगाभ्यास किया गया। ऊंचागांव में आचार्य सत्यप्रिय आर्य के सानिध्य में लगाए योग शिविर में मिशन के पदाधिकारियों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि योग व्यक्ति को बीमारियों से बचाता है। इसे हमें नित्यकर्म में शामिल करना चाहिए, जिससे हम स्वस्थ रह सकें। क्योंकि स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ्य आत्मा निवास करती है। उन्होंने कहा कि योग जीवन का आधार है। यम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याआहार, धारणा, ध्यान, तथा समाधि योग के आठ अंग हैं। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि योग तन के साथ मन को भी स्वस्थ्य रखता है। आज की युवा पीढ़ी डिप्रेशन का शिकार होती जा रही है, नकारात्मक विचारों का प्रवाह उनके दिमागों में भ्रमण करता है, अपनी दिनचर्या में योग को शामिल करना। इस अवसर पर मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, सचिव विवेक प्रिय आर्य आदि रहे।

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्कारद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्क्राइब करें।